Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **"दिल्ली सल्तनत के दौरान आर्थिक स्थितियां।"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

दिल्ली सल्तनत के दौरान आर्थिक स्थितियां

एक यात्री इब्न बतूता जो चौदहवीं शताब्दी के दौरान उत्तरी अफ्रीका से भारत आया था, के अनुसार राज्य में कृषि की स्थिति अत्यंत संपन्न थी। मिट्टी काफी उपजाऊ थी जिस पर प्रति वर्ष दो फसलों का उत्पादन किया जाता था। चावल साल में तीन बार बोया जाता था। इस अवधि के दौरान कई खूबसूरत मस्जिदों, महलों, किलों और स्मारकों का निर्माण किया गया था जिससे इस अवधि की भव्यता के बारे में पता चलता है। इस अवधि के दौरान, सुल्तानों, स्वतंत्र प्रांतीय राज्यों के शासकों और रईसों के पास अकूत धन संपदा थी जिससे वे राजशी और खुशी का जीवन व्यतीत करते थे।

कृषि

1.कृषि, व्यवसाय का एक प्रमुख स्रोत था।

2.भूमि, उत्पादन का स्रोत होती थी। उपज आम तौर पर पर्याप्त होती थी।

2.पुरूष, फसलों की देखभाल और कटाई करते थे;

3.महिलाएं जानवरों की देखभाल करती थी।

कृषि समाज के अन्य भाग थे:

1.बढ़ई, जो औजार बनाते थे

2.लोहार, लौह उपकरणों की आपूर्ति करता था।

3.कुम्हार, घर के बर्तन बनाता था।

4.मोची, जूते सीने का काम करता था।

5.पुजारी, शादी और अन्य समारोहों को संपन्न कराता था।

6.यहां कुछ सहायक कार्य भी होते थे जिनमें साहूकार, धोबी, सफाई कर्मचारी, चरवाहे और नाई शामिल थे।

7.खेती पूरे गांव के जीवन की धुरी थी।

8.प्रमुख फसलों में दलहन, गेहूं, चावल, गन्ना, जूट और कपास शामिल थे।

9.औषधीय जड़ी बूटियों और मसालों का भी निर्यात किया जाता था।

10.उत्पादन स्थानीय खपत के लिए किया जाता था।

11.कस्बे, कृषि उत्पादों और औद्योगिक वस्तुओं के वितरण के केंद्र के रूप में कार्य करते थे।

12.राज्य वस्तु के रूप में उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा रख लेता था।

उद्योग

1.यहां पर ग्रामीण और कुटीर उद्योग थे।

2.यहां पर कार्यरत श्रमिक परिवार के सदस्य होते थे।

3.रूढ़िवादी तकनीक का इस्तेमाल किया जाता था।

4.इस अवधि के दौरान बुनाई और कपास की कताई जैसे कुटीर उद्योग होते थे।

5.सुल्तान जिन बडें उद्यमों का निर्माण कार्य अपने हाथों में लेते थे उन्हें "कारखानो" के रूप में जाना जाता था।

6.शिल्पकार सीधे तौर पर अधिकारियों की निगरानी में कार्यरत होते थे।

6 वस्त्र उद्योग इस समय के सबसे बड़े उद्योगों में से एक था।

व्यापार एवं वाणिज्य

1.सुल्तानों के शासनकाल के दौरान अंतर्देशीय और विदेशी व्यापार में काफी समृद्धि हुयी थी।

2.आंतरिक व्यापार के लिए व्यापारियों और दुकानदारों के विभिन्न वर्ग होते थे।

3.प्रमुख रुप से उत्तर के गुजराती, दक्षिण के छेती, राजपूताना के बंजारे मुख्य व्यापारी होते थे।

वस्तुओं के बड़े सौदों 'मंडियों' में किये जाते थे।

4.मूल बैंकरों या बैंको का उपयोग ऋण देने के लिए और जमा प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

5.आयात की मुख्य वस्तुए रेशम, मखमल, कशीदाकारी सामान, घोड़े, बंदूकें, बारूद, और कुछ कीमती धातुएं होती थी।

6.निर्यात की मुख्य वस्तुएं अनाज, कपास, कीमती पत्थर, इंडिगो, खाल, अफीम, मसाले और चीनी होते थे।

7.वाणिज्य में भारत से प्रभावित देशों में इराक, फारस, मिस्र, पूर्वी अफ्रीका, मलाया, जावा, सुमात्रा, चीन, मध्य एशिया और अफगानिस्तान शामिल थे।

8.जलमार्ग पर नावीय परिवहन और समुंद्री व्यापार वर्तमान की तुलना में अत्यधिक विकसित था।

9 बंगाल, चीनी और चावल के साथ नाजुक मलमल और रेशम का निर्यात करता था।

10.कोरोमंडल का तट कपड़े का एक केंद्र बन गया था।

गुजरात अब विदेशी माल का प्रवेश बिंदु हो गया था।

यूरोपीय व्यापार

1.16 वीं सदी के मध्य और 18 वीं सदी के मध्य के बीच भारत के विदेशी व्यापार में तेजी वृद्धि हुयी थी।

2.इसका मुख्य कारण विभिन्न यूरोपीय कंपनियों की व्यापारिक गतिविधियां थी जो इस अवधि के दौरान भारत आई थीं।

3.लेकिन 7वीं शताब्दी ईस्वी से उनका समुद्री व्यापार अरबों के हाथों में चला गया जिनका हिंद महासागर और लाल सागर में बोलबाला था।

4.अरबों, और वेनेटियनों द्वारा भारतीय व्यापार के इस एकाधिकार को पुर्तगालियों द्वारा भारत के साथ प्रत्यक्ष व्यापार की मांग से तोड़ा जा सका था।

5.भारत में पुर्तगालियों का आगमन अन्य यूरोपीय समुदाय के आगमन के बाद हुआ था और जल्द ही भारत के तटीय और समुद्री व्यापार पर गोरों ने एकाधिकार स्थापित कर लिया था।

कर प्रणाली:

दिल्ली सल्तनत के सुल्तान द्वारा पांच श्रेणियों में कर एकत्र किया जाता था जिससे साम्राज्य की आर्थिक प्रणाली में गिरावट आयी थी।

ये कर थे:

1.उशर,

2.खराज,

3.खम्स,

4.जजिया और

5 जकात।

व्यय की मुख्य वस्तुएं सेना के रखरखाव, नागरिक अधिकारियों के वेतन और सुल्तान के निजी व्यय पर खर्च किये जाते थे।

परिवहन और संचार:

1.परिवहन के सस्ते और पर्याप्त साधन थे।

2.सड़कों पर सुरक्षा संतोषजनक थी और बीमा द्वारा कवर किया जा सकता था।

3.इस समय में मुख्य राजमार्गों के 5 कोस पर सरायों के साथ यात्रा करना यूरोप की तुलना में अच्छा था। इस कारण लोगों में सुरक्षा की भावना होती थी।

4 मुगलों ने सड़कों और सरायों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया था जिससे संचार आसान हो गया था।

5.सम्राज्य में प्रवेश के समय माल पर वस्तु कर लगाया जाता था।

6.सड़क मामलों या राहदरी को अवैध घोषित किया गया था, हालांकि कुछ स्थानीय राजाओं के कुछ लोगों द्वारा इसे एकत्र करना जारी रखा गया था जिसका प्रयोग अच्छी सड़कों को बनाए रखने के लिए किया जाता था।

7.सल्तनत काल उस अवधि के दौरान सबसे स्वर्णिम दौर था जिसका फायदा भारतीय दोनों ने उठाया था।

References: Internet & Competitive books.